जनजातीय समाज की मौखिक शिक्षा का रहा है अद्वितीय इतिहास : लता

बस्तर संभाग के 52 कॉलेजों के लिए शमक विवि का आयोजन

जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत विषय पर कार्यशाला आयोजित

नवभारत रिपोर्टर। जगदलपुर।

जनजातीय समाज की सहभागिता का भाव और मौखिक शिक्षा का इतिहास अद्वितीय है। हमारी बाड़ी और खेतों में जड़ी-बूटी के रूप में औषधि की खान है। यह समाज स्वास्थ्य, शिक्षा, परंपरा के क्षेत्र में सशक्त है। जनजातीय समाज के पास हर प्रकार के ज्ञान का भंडार है। बस जो ज्ञान-परंपराएं परिस्थिति और काल के गर्त में चली गई है उसे उकेरकर सामने लाने की आवश्कता है। उक्त बातें शमक विवि में आयोजित कार्यशाला के दौरान बविप्रा उपाध्यक्ष सुश्री लता उसेण्डी ने कहा।

कार्यक्रम में महापौर श्रीमती सफीरा साहू, कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव, वनवासी विकास समिति के श्री वैभव सुरंगे सहित अन्य उपस्थित थे।

जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत- ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान' विशय पर आयोजित कार्यशाला में सुश्री उसेंडी ने आगे कहा कि देश में जनजातीय वीर-वीरांगणाओं के बलिदान की कई भूमि है, जिसे प्रणाम करने की इच्छा करता है। नई पीढ़ी को इसकी जानकारी होनी चाहिए। हम अपनी परंपराओं और ज्ञान को भुलाते जा रहे हैं। इस ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित कर भावी पीढ़ी तक ले जाने की जरूरत है। महापौर सफीरा साहू ने कहा कि जब आधुनिक शस्त्र नहीं थे, तब भी जनजातीय समाज अपने परंपरागत अस्त्रों से देश की आजादी के लिए लड़ा। हम फिर से उस इतिहास को जानने का प्रयास कर रहे हैं। इसे वर्तमान युवा पीढ़ी भी जाने और लोगों को बताए। कार्यशाला के प्रमुख वक्ता वैभव सुरंगे ने कहा कि जनजातीय समाज को समझने के लिए केवल विदेशी लेखकों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। जनजातीय समाज के अतीत को जानने के लिए संथाल, मुरिया, मुंडा, गोंड व हल्बा इत्यादि समाज के पुरूखों से मिलना होगा।

देश के निर्माण में अद्वितीय योगदान : कुलपति

स्वागत उद्बोधन में कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि अतीत से लेकर अब तक देश के निर्माण व विकास में जनजातीय समाज का योगदान अन्य समाज से तिल मात्र कम नहीं है। जनजातीय समाज का हर क्षेत्र में योगदान इतिहास में दर्ज है। वर्तमान केंद्र सरकार ने सम्पूर्ण जनजातीय समाज के उत्थान के लिए नौ पैरामीटर आइडेंटिफाई कर काम शुरू किया है और 80 हजार करोड़ रुपये भी स्वीकृत की है। इससे देश के 63 हजार जनजातीय गांव लाभान्वित होंगे।

संस्कृति को युवा पीढ़ी तक बढ़ाना होगा : कुलसचिव

अपने आभार उद्बोधन में कुलसचिव अभिषेक कुमार बाजपेई ने कहा कि किसी समाज की संस्कृति नष्ट हो जाती है तो वह समाज भी मिट जाता है। हमें अपने गौरवमयी इतिहास और संस्कृति को युवा पीढ़ी के सहारे आगे तक पहुंचाना है। कार्यशाला के संयोजक डॉ. सजीवन कुमार ने कहा कि जनजातीय समाज के वीर-वीरांगनाएं प्रताड़ित होकर भी देश के लिए संघर्श करते रहे। हमें इन वीरों के इतिहास को शोध के सहारे लिखित रूप प्रस्तुत करने की जरूरत है।

जनजातीय समाज का सहभागिता भाव, इतिहास अद्वितीय

समाज के गौरवशाली अतीत विषय पर विवि ने कार्यशाला की, बस्तर विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष लता उसेंडी ने रखे विचार

भास्कर न्यूज | जगदलपुर

जनजातीय समाज का सहभागिता भाव और मौखिक शिक्षा का इतिहास अद्वितीय है। हमारी बाड़ी और खेतों में जड़ी-बूटी के रूप में औषधि के खान हैं। यह समाज स्वास्थ्य, शिक्षा, परंपरा के क्षेत्र में सशक्त है। इनके पास ज्ञान का भंडार है। बस जो ज्ञान-परंपराएं परिस्थिति और काल के गर्त में चली गई हैं उसे सामने लाने की आवश्यकता है।

यह बातें सोमवार को बस्तर विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में बस्तर विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष लता उसेंडी ने कही। देश में जनजातीय वीर-वीरांगणाओं के बलिदान की कई भूमि हैं जिन्हें प्रणाम करने की इच्छा होती है। हम परंपराओं और ज्ञान को भुलते जा रहे हैं। कुलपति मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि अतीत से लेकर अब तक देश के निर्माण व विकास में जनजातीय समाज का योगदान अन्य समाज से तिल मात्र कम नहीं है। जनजातीय समाज का हर क्षेत्र में योगदान इतिहास में दर्ज है। केंद्र सरकार ने जनजातीय समाज के उत्थान के लिए नौ पैरामीटर आइडेंटिफाई कर काम शुरू किया है। इसमें धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत 80 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। 63 हजार जनजातीय गांव लाभान्वित होंगे।

महापौर सफीरा साहू ने कहा कि जब आधुनिक शस्त्र नहीं थे तब भी जनजातीय समाज परंपरागत अस्त्रों से देश की आजादी के लिए लड़ा। हम फिर से उस इतिहास को जानने का प्रयास कर रहे हैं। वैभव सुरंगे ने कहा कि जनजातीय समाज को समझने के लिए केवल विदेशी लेखकों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। अतीत को जानने संथाल, मुरिया, मुंडा, गोंड व हल्बा समाज के पुरुखों से मिलना होगा। कुलसचिव अभिषेक कुमार बाजपेई ने कहा कि किसी समाज की संस्कृति नष्ट हो जाती है तो वह समाज भी मिट जाता है। डॉ. सजीवन कुमार ने कहा कि जनजातीय समाज के वीर-वीरांगनाएं प्रताड़ित होकर भी देश के लिए संघर्ष करते रहे। हमें इन वीरों के इतिहास को शोध के सहारे लिखित रूप प्रस्तुत करने की जरूरत है। कार्यक्रम में पूर्व विधायक राजाराम तोड़ेम, दशरथ कश्यप, रामनाथ कश्यप, एस राव, गोपाल भारद्वाज, कमलेश, सत्यनारायण पुजारी, बालसाय नेताम, एसपी बिसेन, डॉ. केपी सिंह, संजय जायसवाल, चेलाराम सिन्हा, गोपालनाथ, विमल पांडेय, शिवशंकर जी, रूपनाथ पांडेय, अमित कुमार इत्यादि उपस्थित थे।

कार्यक्रम में मौजूद लता उसेंडी और विश्वविद्यालय का स्टाफ।

कॉलेजों में होने वाले कार्यक्रम की रूप रेखा पर चर्चा

कार्यक्रम के तकनीकी सत्र को वनवासी कल्याण आश्रम के राजीव शर्मा, प्रकाश ठाकुर, यज्ञ जी, उमेश सिंह हरवंशु जोशी ने संबोधित किया। इस दौरान 15 नवंबर तक विवि और कॉलेजों में होने वाले कार्यक्रम की रूप रेखा पर चर्चा की गई। कॉलेजों में जनजातीय वीर- वीरांगनाओं से लेकर प्रश्नोत्तरी, फोटो प्रदर्शनी, पेंटिंग, सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे विविध कार्यक्रम को करने जानकारी दी। इसमें बस्तर संभाग के 52 कॉलेजों से आए कार्यक्रम के संयोजकों और सह संयोजकों ने भाग लिया।

जनजातीय समाज की सहभागिता भाव और मौखिक शिक्षा का इतिहास अद्वितीय : लता

जगदलपुर, 7 अक्टूबर (देशबन्धु)। जनजातीय समाज का सहभागिता भाव और मौखिक शिक्षा का इतिहास अद्वितीय है। हमारी वाड़ी और खेतों में जड़ी-बूटी के रूप में औशधी के खान हैं। यह समाज स्वास्थ्य, शिक्षा, परंपरा के क्षेत्र में सशक्त है। जनजातीय समाज के पास हर प्रकार के ज्ञान का भंडार है। बस जो ज्ञान-परंपराएं, परिस्थिति और काल के गर्त में चली गई है उसे उकेरकर सामने लाने की आवश्कता है। उक्त बातें सोमवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि बस्तर विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष सुश्री लता उसेंडी ने व्यक्त किए। कार्यक्रम में महापौर सफीरा साहू, कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव, वनवासी विकास समिति के वैभव सुरंगे सहित अन्य उपस्थित थे।

जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत- ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान' विशय पर आयोजित कार्यशाला में सुश्री उसेंडी ने आगे कहा कि देश में जनजातीय वीर-वीरांगणाओं के बलिदान की कई भूमि हैं जिसे प्रणाम करने की इच्छा करती है। नई पीढ़ी को इसकी जानकारी होनी चाहिए। हम अपनी परंपराओं और ज्ञान को भुलाते जा रहे हैं। इस ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित कर भावी पीढ़ी तक ले जाने की जरूरत है। अपने स्वागत उद्बोधन में कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि अतीत से लेकर अब तक देश के निर्माण व विकास में जनजातीय समाज का योगदान अन्य समाज से तिल मात्र कम नहीं है। जनजातीय समाज का हर क्षेत्र में योगदान इतिहास में दर्ज है। प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि वर्तमान की केंद्र सरकार ने सम्पूर्ण जनजातीय समाज के उत्थान के लिए नी पैरामीटर आइडेंटिफाई कर काम शुरू किया है। इसमें धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत 80 हज़ार करोड़ रुपये खर्च होंगे। इससे देश के 63 हजार जनजातीय गांव लाभान्वित होंगे। महापौर सफीरा साहू ने कहा कि जब आधुनिक शस्त्र नहीं थे तब भी जनजातीय समाज अपने परंपरागत अस्त्रों से देश को आजादी के लिए लड़ा। हम फिर से उस इतिहास को जानने का प्रयास कर रहे हैं। इसे वर्तमान युवा पीढ़ी भी जाने और लोगों को बताए। कार्यशाला के प्रमुख वक्ता श्री वैभव सुरंगे ने कहा कि जनजातीय समाज को समझने के लिए केवल विदेशी लेखकों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। जनजातीय समाज के अतीत को जानने के लिए संथाल, मुरिया, मुंडा, गोंड व हल्बा इत्यादि समाज के पुरूखों से मिलना होगा। श्री सुरंगे ने कहा कि मुख्य समाज का इस ओर कभी ध्यान ही नहीं गया कि जनजातीय समाज का भी कोई आध्यात्मिक योगदान है और उनका का कोई दर्शन है। जनजातीय समाज को सुनने से ज्यादा महसूस करके समझा जा सकता है। श्री सुरंगे ने बताया कि भारतीय इतिहास जहां से शुरू हुआ है वहीं से जनजातीय समाज का भी इतिहास प्रारंभ है। बिना शबरी, केवट प्रसंग के रामायण महाभारत भी अधूरा है। श्री सुरंगे ने देश में आजादी में जनजातीय वीर-वीरांगणाओं का इतिहास बताते हुए कहा कि इस समाज का स्वतंत्रता आंदोलन में बलिदान मंगल पांडे के बलिदान से भी पुराना है। वीर योद्धा तिलका मांझी ने 1780 में ही अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। यह संथाल क्रांति 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा थी। अंग्रेजों के खिलाफ जनजातीय वीरों का विद्रोह सदैव चलता रहा। जो बातें सदियों पहले चाणक्य ने कही थी उसे भगवान बिरसा ने कहकर समाज को एकत्रित किया। भगवान बिरसा ने अपने छोटी सी आयु में युगों का काम किया। उन्होंने समाज सुधार, न्याय, ज्ञान, क्रांति की नई सीख दी। श्री सुरंगे ने अपने उद्बोधन में परलकोट विद्रोह, सिद्धो कान्हों, भूमकाल, पामगढ़ भील क्रांति इत्यादि का जिक्र करते हुए कहा कि जनजातीय समाज को लेकर अंग्रेजों के कारण बनी खराब छवि को बदलने का काम शिक्षा जगत के लोग ही कर सकते हं। जनजातीय समाज की एक-एक परंपरा का डॉक्यूमेंटेशन किए जाने की जरूरत है। उनके इतिहास को लेकर नए सिरे से रिसर्च करना जरूरी है। अपने आभार उद्बोधन में कुलसचिव श्री अभिशेक कुमार बाजपेई ने कहा कि किसी समाज की संस्कृति नश्ट हो जाती है तो वह समाज भी मिट जाता है। हमें अपने गौरवमयी इतिहास और संस्कृति को युवा पीढ़ी के सहारे आगे तक पहुंचाना है।

जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत विषय पर कार्यशाला आयोजित

अपने स्वागत उदबोधन में कार्यशाला के संयोजक डॉ. संजीवन कुमार ने कहा कि जनजातीय समाज के वीर-वीरांगणाएं प्रताड़ित होकर भी देश के लिए संघर्श करते रहे। हमें >> शेष पृष्ठ 9 पर

आयोजन : जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत पर विश्वविद्यालय में कार्यशाला आयोजित, बविप्रा उपाध्यक्ष लता उसेंडी ने युवाओं से समाज को जानने का किया आह्वान

जनजातीय समाज का देश के लिए योगदान अद्वितीय, युवा इसे जानें और पढ़ें

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जगदलपुर . जनजातीय समाज का सहभागिता भाव और मौखिक शिक्षा का इतिहास अद्वितीय है। युवा इसे जानें और पढ़ें। यह समाज स्वास्थ्य, शिक्षा, परंपरा के क्षेत्र में सशक्त है। जनजातीय समाज के पास हर प्रकार के ज्ञान का भंडार है। बस जो ज्ञान-परंपराएं पार्श्वस्थिति और काल के गर्त में चली गई हैं उसे उकेरकर सामने लाने की आवश्यकता है। यह बातें सोमवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि वनवासी विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष लता उसेंडी ने कही। जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान विषय पर यह कार्यशाला आयोजित की गई थी। लता उसेंडी ने कहा कि नई पीढ़ी को जनजातीय समाज के योग की जानकारी होनी चाहिए। जनजातीय समाज का योगदान समूचे देश में है। कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि अतीत से लेकर अब तक देश के निर्माण व विकास में जनजातीय समाज का योगदान अन्य समाज से तिल मात्र कम नहीं है। प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र सरकार ने सम्पूर्ण जनजातीय समाज के उत्थान के लिए नौ पैरामीटर तय कर काम शुरू किए हैं। इसमें धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत 80 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। इससे देश के 63 हजार जनजातीय गांव लाभान्वित होंगे। महापौर सफीरा साहू ने कहा कि जब आधुनिक शस्त्र नहीं थे तब भी जनजातीय समाज अपने परंपरागत अस्त्रों से देश की आजादी के लिए लड़ा। हम फिर से उस इतिहास को जानने का प्रयास कर रहे हैं। इसे वर्तमान युवा पीढ़ी भी जाने और लोगों को बताएं।

सोमवार को विवि में कार्यशाला के शुभारंभ अवसर पर मौजूद अतिथिगण।

छात्रों के अलावा जनजातीय समाज के लोग व अन्य भी मौजूद रहे।

जनजातीय समाज को सुनने से ज्यादा महसूस करना जरूरी

कार्यशाला के मुख्य वक्ता वैभव सुरंगे ने कहा कि जनजातीय समाज को समझने के लिए केवल विदेशी लेखकों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। जनजातीय समाज के अतीत को जानने के लिए संथाल, मुरिया, मुंडा, गोंड व हल्बा क्रांतियों समाज के पुरखों से मिलना होगा। श्री सुरंगे ने कहा कि मुख्य समाज का इस ओर कभी ध्यान ही नहीं गया कि जनजातीय समाज का भी कोई आध्यात्मिक योगदान है और उनका का कोई दर्शन है। जनजातीय समाज को सुनने से ज्यादा महसूस करके समझा जा सकता है। सुरंगे ने बताया कि भारतीय इतिहास जहां से शुरू हुआ है वहीं से जनजातीय समाज का भी इतिहास प्रारंभ है। बिना शबरी, केवट प्रसंग के रामायण महाभारत भी आधूरा है। सुरंगे ने देश में आजादी में जनजातीय वीर-वीरांगणाओं का इतिहास बताते हुए कहा कि इस समाज का स्वतंत्रता आंदोलन में बलिदान मंगल पांडे के बलिदान से भी पुराना है। आभार उद्बोधन में कुलसचिव अभिषेक बाजपेई ने कहा कि किसी समाज की संस्कृति नष्ट हो जाती है तो वह समाज भी मिट जाता है। हमें अपने गौरवमयी इतिहास और संस्कृति को युवा पीढ़ी के सहारे आगे तक पहुंचाना है। कार्यशाला के संयोजक डॉ. सजीवन कुमार ने कहा कि जनजातीय समाज के वीर प्रलोभित होकर भी देश के लिए संघर्ष करते रहे। हमें इन वीरों के इतिहास को शोध के सहारे लिखित रूप प्रस्तुत करने की जरूरत है। कार्यक्रम के तकनीकी सत्र को वनवासी कल्याण आश्रम के राजीव शर्मा, प्रकाश ठाकुर, यश जी, उमेश सिंह हरवंशु जोशी ने संबोधित किया। इस दौरान अगले 15 नवंबर तक विवि और कॉलेजों में होने वाले कार्यक्रम की रूप रेखा पर चर्चा की गई।